मढ़ई मेला

बाबा मायाराम

होशंगाबाद ज़िले में पिपरिया और पचमढ़ी के बीच स्थित है मटकुली। आज (19 अक्टूबर) को वहाँ की मढ़ई है। मैं अपने बेटे के साथ मढ़ई-मेला देखने जा रहा हूँ। हम सतपुड़ा के जंगल के बीच से गुज़र रहे हैं। थोड़ी देर पहले हमें मोर का एक सुन्दर जोड़ा दिखा। रास्ते में अपने-अपने गाँवों से मढ़ई मेले में जा रहे सजे-धजे स्त्री-पुरुष और बच्चे मिल रहे हैं।

हम मटकुली पहुँच गए हैं। यहाँ सड़क से लगे एक मैदान में मढ़ई-मेला लगा हुआ है। ऊँची-ऊँची ढालों की झलक हमें सबसे पहली दिखी। यहाँ गांगो की मढ़िया (मंडप) है। पड़िहार (पूजा करने वाले) भी हैं। गांगो की मूर्ति विराजी है। मढ़िया इमली की टहनियों और पत्तों से बनी लगती है। ढालें छतरीनुमा लग रही हैं। बाँसों के एक सिरे पर मोर पंख लगाकर इन्हें बनाया जाता है। ये ढालें करीब 15-20 फीट ऊँची होंगी। इन्हें लेकर लोग नाचते-गाते मढ़ई में आते हैं। अहीर नृत्य इस मेले का खास आकर्षण होता है। इसमें विशेष वेश-भूषा में ढाल के साथ अहीर नाचते हुए चलते हैं। बाद में, ढालें लेकर वे गांगो की मूर्ति के आसपास चक्कर लगाते हैं।

मढ़ई में ढालों के आने का सिलसिला जारी है। अब तक मेले में काफी लोग आ चुके हैं। दूरदराज के गाँव के लोग बैलगाड़ियों से भी आए हैं। बैलगाड़ियाँ विशाल पीपल के नीचे खड़ी हैं। बैल काफी सजे-धजे हैं। उन पर रंग-बिरंगे मुहरनुमा छापे दिखाई दे रहे थे।

जैसे-जैसे शाम ढल रही है मेले की रौनक बढ़ती जा रही है। तेज़ रोशनी वाले बल्ब चमक रहे हैं। आदिवासी युवक-युवतियाँ व बच्चों की टोलियाँ इधर-उधर घूम रही हैं। मिठाईयों की दुकानें हैं। मिट्टी के सुन्दर खिलौने – तोता, गाय-बैल आदि हैं। गुब्बारे हैं। टारों ओर उमंग और उत्साह का माहौल है।

कार्तिक अमावस्या यानी दीपावली के अगले दिन से ही मढ़ई-मेलों का सिलसिला शुरू हो जाता है और पूर्णिमा तक चलता है। मुख्य रूप से गोंड आदिवासी इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। गज़ेटियर के अनुसार गांगो तेलिन की याद में यह त्यौहार मनाया जाता है। वह एक बड़ी जादूगरनी थी। यहाँ गांगों की पूजा करने वाले बिसराम का कहना है कि ढाल देवी का प्रतीक है।

मेले में अब सभी ढालें आ चुकी हैं। दुकानों पर भीड़ बढ़ती जा रही है। लोग मिठाईयाँ, सिंघाड़े और पीड़ (कन्द-मूल) खरीद रहे हैं। धक्का-मुक्की हो रही है। अब घर जाने का समय हो चला है। पर, लौटने का मन नहीं कर रहा है। कई साल बाद अपने इलाके की मढ़ई में जाना बहुत ही मज़ेदार रहा।

क्या तुम मढ़ई जैसे मेले में भाग लेना चाहोगे?

मढ़ई मेला

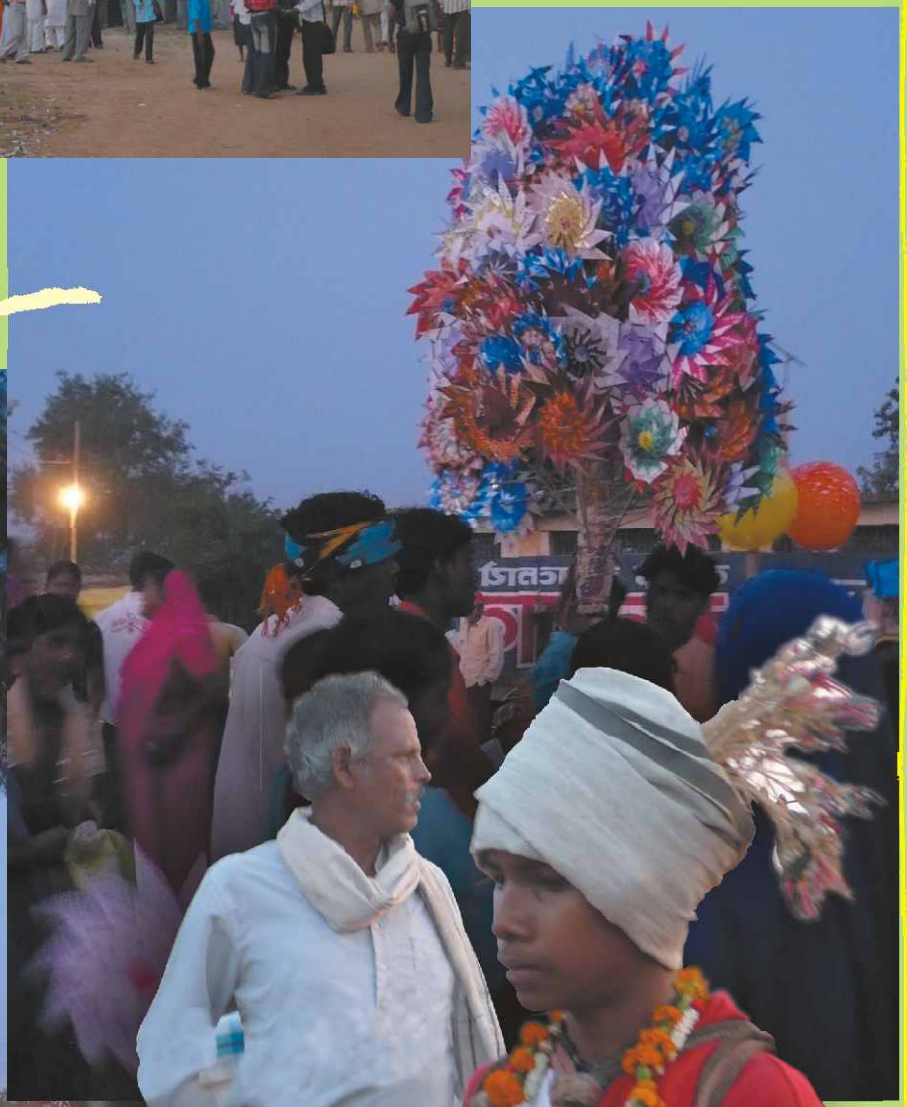

फोटोः बाबा मायाराम